भाषा शिक्षण में बातचीत क्यों ज़रूरी है ?

इन्दु पंवार

अपने विद्यालय के अनुभवों के आधार पर लेखिका बताती हैं कि स्कूल में बच्चों से बातचीत करना क्यों ज़रूरी है? कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत कैसे-कैसे शुरू की जा सकती है। वे इसके उदाहरण साझा करती हैं। वे यह भी चर्चा करती हैं कि बच्चों के साथ बातचीत विभिन्न भाषाई कौशल सीखने में तो अहम है ही, पर यह बच्चों के साथ जुड़ने, उनको जानने-समझने, उनका शिक्षक व स्कूल के साथ सम्बन्ध बनाने में भी बहुत अहम भूमिका निभाती है। सं.

बातचीत हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। वह समाज में हमारे होने का एहसास कराती है। सामान्य बातचीत से सार्थक संवाद की ओर बढ़ने का काम स्कूल में ही सम्भव है। बेहतर संवाद के द्वारा ही बच्चों और समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। हम अलग-अलग व्यक्तियों (अपने बच्चे से, स्कूल के बच्चों से, मित्रों से, बड़ों से, रिश्तेदारों से आदि) से अलग-अलग तरह के संवाद करते हैं। यही बात लेखन में भी लागू होती है क्योंकि लिखना एक तरह का संवाद ही है। हमारा लिखना तभी सार्थक होता है जब हमें मालूम होता है कि उसका पाठक कौन है? किस पाठक वर्ग के लिए कितना और क्या लिखना है? उसका उद्देश्य क्या है? यह सब तभी सम्भव हो पाता है, जब हमारे पास पर्याप्त शब्द भण्डार हो, उसका उपयोग करने की समझ व अनुभव हो, साथ ही हमारे परिवेश में बातचीत के ढेर सारे अवसर उपलब्ध हों। इसी प्रकार, प्रत्येक बच्चे के पास समय, अवसर, आज़ादी हो, ताकि वह अपनी बात को कह सके और दूसरे की बात को सुन सके व इस कहने-सुनने के एहसास को समझ सके। शुरुआती कक्षाओं में और आगे की कक्षाओं में बच्चों में समझ का विस्तार हो, इसके लिए बातचीत के उद्देश्य क्या हों और विषय क्या हों, इसके बारे में सोचना महत्त्वपूर्ण है।

स्कूल में अकसर हम इन चुनौतियों से जूझते हैं, जैसे– स्कूल में बच्चों का मन न लगना, उनका नियमित रूप से स्कूल न आना, या हमें यह लगना कि बच्चे बेवजह बोलते और शोर करते हैं, या यह सोच कि जब बच्चों से अधिक बात या मित्रता कर लीजिए तो वे सिर पर चढ़ने लगते हैं आदि। यदि इन बिन्दुओं को समझने की कोशिश की जाए तो बच्चों के इस व्यवहार के कारण समझ में आने लगते हैं। अधिकतर बच्चों का स्कूल न आने का एक कारण उनका आर्थिक परिवेश है। वे दैनिक कार्यों में अपने माता-पिता का हाथ बँटाते हैं। स्कूल में बच्चों का मन इसलिए नहीं लगता क्योंकि उन्हें घर जैसा माहौल, यानी वह प्यार और आदर, नहीं मिलता, और उन्हें अपने मन से काम करने की आज़ादी नहीं मिलती।

बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं तो उनका सामना अपरिचित बच्चों-शिक्षकों, एक निश्चित अनुशासित दिनचर्या और मानक भाषा (अर्थहीन प्रतीकों या चिह्नों) से होता है, जो बच्चों में भय पैदा करते हैं और वह बोलना / बात करना कम कर देते हैं।

बच्चों को ढेर सारे विषयों में अपनी बात, अपने अनुभव कहने होते हैं, पर किसी सुनने वाले के अभाव के कारण वे नहीं कह पाते। यहाँ

तक कि अपने घर में भी उन्हें सुनने वाला कोई नहीं रहता। लेकिन उनकी इस गुफ़्तगू को शोर समझ लिया जाता है। स्कूल में ख़ाली समय में आपस में बहुत-सी बातें करते हैं, उस समय भाषा शिक्षण के बुनियादी कौशलों की दक्षताओं का आकलन करना बेहतर रहता है। हम अक़्सर बच्चों से केवल औपचारिक बातचीत ही करते हैं और पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित रहते हैं। अधिकतर बातचीत हमारे द्वारा दिए गए आदेश या निर्देश से सम्बन्धित होती है।

संवाद की आवश्यकता

यदि हम कक्षा में बच्चों के साथ पढ़ाई-लिखाई के अलावा अन्य प्रकार का कोई संवाद स्थापित नहीं करते, तो ऐसी कक्षा में बच्चे अधिक डरे-सहमे और समाज व स्कूल से अपने-आप को कटा महसूस करते हैं। दूसरी ओर, यदि हम अपने छात्रों के मध्य उनसे उनके घर, परिवार और उनके बारे में जानने के लिए सहज संवाद करते हैं तो कक्षा के बच्चों में हमें अधिक खुलापन नज़र आता है। इस तरह के संवाद से अध्यापक और छात्र के मध्य अच्छे, सजीव और मधुर सम्बन्ध स्थापित होते हैं, जिससे छात्रों में झिझक समाप्त होती है और उनमें आत्मविश्वास जागृत होता है। हमें बच्चों को मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से समझने के लिए ख़ुद को संवाद के ज़रिए बच्चों की दुनिया और विचारों से जोड़ना होगा तभी उन्हें शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने में आसानी होगी। अनेक भाषाई कौशलों के साथ विभिन्न विषयों पर सोच और तर्कशील समझ विकसित करना संवाद का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। जिस प्रकार कोई भी बीज बोने से पहले हम ज़मीन को तैयार करते हैं, उसी तरह पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को शुरू करने से पहले बातचीत का होना ज़रूरी है।


चित्र : हीरा धुर्वे

अपने विद्यालय में छात्रों से बातचीत करने के कुछ तरीक़े, जो मैं प्रयोग में लाती हूँ, निम्नलिखित हैं–

1. पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया शुरू करने से पहले अपने और बच्चों के बीच जान पहचान। इसके लिए सामान्य बातचीत, जैसे– उनका नाम पूछना, उनके घर के सदस्यों के बारे में बातचीत करना आदि जिससे हम दोनों का संकोच दूर होता है और इसका सीधा प्रतिफल यह होता है कि बच्चों को प्रारम्भिक दिनों में स्कूल आने में डर भी नहीं लगता और वे ख़ुशी-ख़ुशी स्कूल आने लगते हैं।

2. बच्चा जब स्कूल आता है उसके पास मौखिक भाषा का भण्डार होता है, जिसे स्कूली भाषा से जोड़ना शिक्षक का काम बन जाता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में जब बच्चे स्कूल आना शुरू करते हैं वे विद्यालय को अजनबी स्थान समझकर अचम्भित हो सकते हैं। भाषा की विविधता, उसका सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश उन्हें भिन्न लग सकता है, हम उन्हें विविधता का महत्त्व सिर्फ़ बातचीत से ही समझा सकते हैं और उन्हें सुरक्षा की भावना महसूस करा सकते हैं। मुझे स्मरण है कि मेरी कक्षा में एक बच्ची थी जो शुरू में स्कूल तो ख़ुश होकर आती थी, लेकिन जब भी पढ़ने के लिए कहा जाता वह गम्भीर होकर चुपचाप बैठ जाती। इसपर मैंने उससे बातचीत की और पूछा कि तुम स्कूल आकर क्या करना चाहोगी उसने तपाक से उत्तर दिया– ड्राइंग करना चाहूँगी। मैंने उसे रंगीन चाक दिए और श्यामपट्ट पर अपनी रुचि के चित्र बनाने को कहा। उसने सुन्दर चित्र बनाने शुरू किए और साथ ही स्वयं उन चित्रों के नामों का भी उच्चारण करना शुरू कर दिया। मैंने उसकी इसी रुचि को स्कूली भाषा से जोड़ने का उपक्रम बनाया।

3. बच्चों से बातचीत करने से शिक्षक के लिए उनका आकलन करना भी आसान हो जाता है। उनसे बातचीत करके उनके सोचने के ढंग और तर्कशक्ति का सहज ज्ञान हो जाता है। मैंने कक्षा में बच्चों से पूछा कि तुम्हारे घर में कौन-कौन से जानवर पाले जाते हैं अधिकांश बच्चों का जवाब था– गाय, बकरी, कुत्ता, बिल्ली, मुर्ग़ी आदि। बातचीत के क्रम को आगे बढ़ाते हुए मैंने फिर प्रश्न किया कि गाय, बकरी, बिल्ली, मुर्ग़ी आदि कैसे एक दूसरे से अलग हैं, बच्चों का जवाब था कि गाय दूध देती है, लेकिन मुर्ग़ी अण्डे देती है। किसी ने कहा कि मुर्ग़ी के पंख भी होते हैं, तो किसी बच्चे ने कहा कि दूध तो बकरी भी देती है लेकिन हम सिर्फ़ गाय का दूध पीते हैं। बातचीत में यह भी आ गया कि बकरी का भी दूध पिया जाता है।

4. बच्चों के लिए बातचीत के जितने ज़्यादा मौक़े कक्षा में निर्मित किए जाएँगे, उतना ही बच्चे पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया के लिए जल्दी तैयार होगे। यानी, उन्हें समूहों में बाँटकर अपने अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। उदाहरण के लिए, तुम्हारे घर में जब मेहमान आते हैं तो तुम क्या तैयारी करते हो। ऐसे में जो बच्चे झिझक महसूस करते हैं वे भी इस बातचीत में हिस्सा लेने लगते हैं और नि:संकोच अपनी बात सुनाने लगते हैं जो पढ़ने-लिखने से पूर्व की एक आवश्यक क्रिया है।

5. बातचीत को पढ़ने-लिखने से कैसे जोड़ा जाए– अनुभव सुनाकर या बच्चों की मनपसन्द चीज़ों की बातचीत से। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे ने कोई अनुभव सुनाया तो इसका सीधा-सा अभिप्राय यह है कि उसके पास शब्द भण्डार है, जिसके कारण वो अपने अनुभवों को सुनाने में सफल रहा। उन्हीं अनुभवों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए, जिससे बच्चों में आत्मविश्वास आता है कि उसकी बात को सुना जा रहा है, समझा जा रहा है और वह जो कह रहा है, अर्थपूर्ण है। मैंने कक्षा में बच्चों से पूछा कि तुम्हें खाने में कौन-सी सब्ज़ी पसन्द है। इसपर एक बच्चे का जवाब था– भिण्डी। बातचीत के लिए आधार मिलने पर मैंने पूछा कि उसका रंग कैसा होता है, बच्चे ने कहा– हरा। इस तरह बातचीत के लिए सूत्र खुलते गए और मैंने बातचीत के क्रम को आगे बढ़ाते हुए प्रश्न किया कि क्या हरे रंग की और भी सब्ज़ियाँ होती हैं, बच्चे उन सब्ज़ियों के नाम स्वयं बोलने लग गए। बच्चों से उनका मनपसन्द रंग पूछने पर बातों-बातों में बच्चों को रंगों की जानकारी हो गई। इसी तरह बच्चों से उनके पसन्द के खेल-खिलौनों की बातचीत करना और उसी बातचीत को आधार बनाकर उसे अन्य मनपसन्द खेलने की चीज़ों तक लाना भी इस सम्बन्ध में अच्छा अभ्यास सिद्ध होता है। इसी तरह थोड़े बड़े बच्चों को हम बातचीत से डायरी लेखन तक आसानी से पहुँचा सकते हैं।

6. बातचीत द्वारा ध्वनि और संकेतों से जोड़ना– बच्चों को उनके मनपसन्द चित्र बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़कर उनसे उन चित्रों का मौखिक उच्चारण करवाया। जैसे– किसी बच्चे ने आम बनाया, तो आम बोलना 'आ' ध्वनि से परिचय कराकर 'आ' का संकेत जोड़ दिया। इस विधि को भी मैंने प्रभावी पाया।

7. बातचीत को हम प्रोजेक्ट से भी जोड़ सकते हैं। अगर हम सीधे बच्चों को कहें कि प्रोजेक्ट बनाओ, तो ये शब्द स्वयं में ही बड़ा नीरस और कठिन है। मैंने एक दिन बच्चों से कहा कि अपना जन्मदिन और जन्म का माह बताओ, तो छोटे-बड़े सभी बच्चे उत्तर देने को उत्सुक दिखे। मैंने छोटे बच्चों से मौखिक रूप से बोलने और बड़े बच्चों को चार्ट पेपर देकर लिखने को कहा। बच्चों ने चार्ट पर बहुत ही ख़ूबसूरत तरीक़े से लिखा। फिर मैंने बच्चों द्वारा दर्ज माह की विशेषता लिखने को कहा और इसके लिए घर पर बातचीत कर दूसरे दिन चार्ट पर लिखने को कहा। बच्चे बड़ी स्तरीय जानकारी घर वालों से पूछकर लाए। इसी तरह, जो त्योहार वे मानते हैं, उनपर भी बातचीत सार्थक रही।

8. बातचीत से ही बच्चों की सृजनात्मकता को विकसित किया जा सकता है। जैसे– किसी चित्र को देखकर ख़ूब बातचीत करना, कहानी सुनकर उन्हें तर्क करने को प्रेरित करना व उसी तरह की कहानी को सुनना आदि।

बातचीत करने की मान्यताएँ और बातचीत के तरीक़े

1. बड़ों के जैसे ही बातचीत करने का गुण और प्रवृत्ति बच्चों में भी समान रूप से पाई जाती है। इसपर कुछ लोगों का ये मानना हो सकता है कि तब इसके लिए बच्चों को विशेष समय / वातावरण / ध्यान दिए जाने की क्या आवश्यकता है। लेकिन मेरा अनुभव रहा है कि शुरुआती भाषाई कौशलों को दृढ़ करने के लिए उन्हें अलग से बातचीत के मौक़े देने पड़ेंगे।

2. बातचीत से ही बच्चों की कल्पनाशीलता में वृद्धि की जा सकती है। आज भी ये मिथक बरक़रार है कि बच्चे स्कूल आने से पूर्व कोरी स्लेट होते हैं। मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि उन्हें बातचीत और अभिव्यक्ति के पूरे मौक़े देकर हम उनका आत्मविश्वास तो जगाते ही हैं, साथ ही उन्हें कुशलता से अपनी बातों को रखने के योग्य भी बना देते हैं। हमारी बातचीत ऐसे हो कि बच्चा सुनने में रुचि ले। कहीं ऐसा न हो कि हमने तो अपने स्तर से बातचीत कर ली, लेकिन बच्चों ने अपने अनुकूल न होने के कारण उसपर ध्यान ही नहीं दिया।

3. बातचीत करते समय सभी बच्चों का ध्यान रखा जाए और सभी बच्चों को अपनी बातें रखने के समान मौक़े दिए जाएँ। बच्चों के साथ जब भी बातचीत करें, यह ज़रूरी है कि उस बातचीत की एक पूर्व योजना निरूपित की जाए। एक विषय पर लगातार कुछ देर ख़ूब बातचीत की जाए तभी उसे शिक्षण से जुड़ने में मदद मिलेगी। प्रश्न तैयार हों। बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया जाए। इसके लिए अच्छा अवसर होता है कि उनके उत्तरों में ही सवाल बनाया जाए और बातचीत को विस्तार दिया जाए।

4. बातचीत दो तरह की हो सकती है। एक वह होती है जिसमें किसी एक विशेष बात को महत्त्व न देकर बातचीत का रुख बदला जाता है जबकि कोई बातचीत किसी विशेष घटना, अनुभव या परिवेश पर भी हो सकती है। मेरा मानना है कि कक्षा में ऐसी बातचीत बच्चों को ज़्यादा भाती है। इससे बच्चों में अभिव्यक्ति के कौशल के साथ स्वाभाविक रूप से व्याप्त हिचकिचाहट को दूर करने में मदद मिलती है और उनमें आत्मविश्वास भी पैदा होता है।

स्कूल में ऐसी दिनचर्या बनाई जानी चाहिए, जिसमें छात्रों के साथ अकेले-अकेले या समूह में संक्षिप्त अनौपचारिक बातचीत की जा सके। कक्षावार भाषा विषय के अधिकतर लर्निंग आउटकम संवाद की भूमिका से सीधेतौर पर जुड़ते हैं।

बच्चे की मौखिक भाषा और विद्यालयी भाषा को जोड़ने में बातचीत की मुख्य भूमिका है। इससे हमें आसानी से बच्चों का आकलन करने में सहायता मिलती है और योजना बनाकर छात्रों को पढ़ने-लिखने के लिए तैयार करने में भी आसानी होती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि बातचीत बच्चों के शिक्षण, विशेषकर बुनियादी शिक्षण, में एक महत्त्वपूर्ण टूल है। इससे हम उनके लिए एक ऐसी उर्वर भूमि तैयार कर पाएँगे जहाँ उनको बातचीत के माध्यम से ही हम संकेतों की तरफ़ आसानी से ले जाकर उन्हें ध्वनियों, प्रतीकों, मात्राओं आदि से परिचित होने के साथ समझकर पढ़ने-लिखने की ओर बढ़ा सकते हैं। कक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं रोचक बनाने में बातचीत एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण सामग्री साबित हो सकती है, बशर्ते शिक्षक सभी बच्चों को इस बातचीत का हिस्सा बनने में धैर्य एवं सहयोग से कार्य करे।

इन्दु पंवार, 23 वर्षों से प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण कार्य कर रही हैं। वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगाँव, जनपद पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड में प्रधान अध्यापिका हैं।

सम्पर्क : indupanwar195@gmail.com